ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

चम्बल क्षेत्र में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति प्रशासनिक दृष्टिकोण

Administrative Approach Towards Freedom Movement In Chambal Region

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

कौशलेन्द्र उपाध्याय
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
पी.जी कॉलेज, अम्बाह,
मध्य प्रदेश, भारत

मंजु तोमर
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान
पी.जी कॉलेज, अम्बाह,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में चम्बल क्षेत्र में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति प्रशासनिक दृष्टिकोण का वर्णन किया गया है। जिसमें चम्बल क्षेत्र के स्वतंत्रता सैनानियों पर प्रशासन के द्वारा किये गए अत्याचारों का वर्णन है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन मे म.प्र. के चम्बल क्षेत्र के भिण्ड, मुरैना, एवं श्योपुर जिले के स्वतंत्रता सैनानियों ने बढ़चढ़ के भाग लिया था क्योंकि अधिकतर स्वतंत्रता सैनानी महान क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद विस्मिल से अत्यधिक प्रभावित थे उनकी राष्ट्र प्रेम की भावना से उत्साहित होकर इन स्वतंत्रता सैनानियो ने भी अपना सर्वस्व बलिदान करने का निश्चय किया। प्रस्तुत शोध पत्र मे इन स्वतंत्रता सैनानियों की प्रमुख घटनाओं का वर्णन भी किया गया है। इस शोध पत्र में ग्वालियर के तत्कालीन डी.आई.जी. घाटकर साहब और मुरैना जिले के तत्कालीन सूबा (कलेक्टर) श्री मल्हारराव पवार के द्वारा किए गए प्रशासनिक अत्याचारों का वर्णन है।

The paper presented describes the administrative approach towards the freedom movement in Chambal region. Which describes the atrocities committed by the administration on the freedom fighters of Chambal region. In the freedom movement of the country the freedom fighters of Bhind, Morena, and Sheopur district of Chambal region had participated in a big way because most of the freedom movements were highly influenced by the great revolutionary Pt. Ramprasad Bismil.The major events of these freedom fighters are also described in the presented paper. There is a description of the administrative atrocities committed by DIG Ghatkar Saheb and Shri Malharrao Pawar, Collector of Morena District.

मुख्य शब्द : चम्बल क्षेत्र, प्रशासन, स्वतंत्रता सैनानी, राष्ट्रभक्ति, आंदोलन, अत्याचार।
Chambal Region, Administration, Freedom Fighters, Patriotism, Agitation, Atrocities.

प्रस्तावना

चम्बल क्षेत्र का स्वतंत्रता संग्राम भी प्रशासनिक अत्याचारों से त्रस्त रहा है। यह क्षेत्र अंगेजों के मित्र सिंधिया शासकों के अधीन था।[1]यह स्वाभाविक ही था कि ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध आन्दोलनकारी गतिविधियों को रोकने का उत्तरदायित्व भी सिंधिया शासकों पर ही था लेकिन उन्होंने भी प्रशासनिक अधिकारियों से मिलकर आन्दोलन कारियों का दमन किया। सन् 1857 से 1942 तक चम्बल क्षेत्र में ब्रिटिश सरकार का कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष दमन चक्र चलता रहा। स्वतंत्रता आंदोलन को सफल बनाने के लिए रानी लक्ष्मीबाई ने भिण्ड क्षेत्र के मार्ग से ग्वालियर प्रस्थान की योजना बनाई यह मार्ग असेहट, मिहोना, इन्दुरूखी, अमायन, मो, से मुरार होकर जाता था। मिहोना के निकट सूर्यमंदिर पर विजय के लिए रानी लक्ष्मीबाई ने पूजा–अर्चना की इसलिए उस स्थान का नाम बालाजी पडा। यहाँ के सभी क्षेत्रीय राजाओं ने महारानी का सेना सहित साथ दिया और शीघ्र ही महारानी लक्ष्मीबाई ने इस सहायता से अंग्रेजों से पराक्रम के साथ युद्ध किया। इस युद्ध मे अपार वीरता का परिचय देते हुए रानी शहीद हो गई। बाबा गंगादास की शाला के पास उस स्थल पर समाधि आज भी है। इस युद्ध में भिण्ड जिले के विलाव, अमायन राज्य के राजा भगवन्त सिंह

जूदेव वीरगति को प्राप्त हुए। राजकुमार चिमना सिंह घायल हो गए किन्तु घायलावस्था मे अंग्रेजों के द्वारा इन्हे बंदी बनाकर जालोन की जेल मे रखा गया। अंग्रेज चिकत्सक दल के द्वारा इनके इलाज का प्रयास किया गया लेकिन चिमना सिंह ने इलाज कराने से इंकार कर दिया और उसी जेल मे इनके जीवन का अंत हो गया। उरई, जिला जालोन की जेल में आज भी उनकी समाधि बनी हुई है। विलाव अमायन की इस सहायता के परिणाम स्वरूप अंग्रेज इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने इस राज्य के 138 ग्रामों एवं बोहरा राज्य के 24 ग्रामों का ग्वालियर राज्य मे विलय कर दिया।[2] सन् 1942 की अगस्त क्रान्ति का प्रभाव चम्बल अंचल के भिण्ड जिले पर भी पड़ना स्वाभाविक था और इस देश के आंदोलनकारियों ने बडे शानदार ढंग से इस आन्दोलन में भाग लिया। कुछ लोग शांतिपूर्ण सत्याग्रह के पथ पर अग्रसर हो गये। भिण्ड जिले के छात्र नेता श्री हरिकिशन भूता तथा युवा नेता यशवंत सिंह, पॉण्डरी के श्रीधर सिंह, आलमपुर के श्री जगन्नाथ प्रसाद जैसे कई नौजवानो ने भिण्ड क्षेत्र के नवयुवकों को जागरूक करना प्रारंम्भ कर दिया इसी कारण 7 अप्रैल 1942 के दिन यशवंत सिंह कुशवाह तथा हरिकिशन दास भूता को ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सुरक्षा अधिनियम के अतंर्गत गिरफ्तार कर लिया गया।[3] जिले भर मे इन गिरफ्तारियों का कड़ा विरोध किया गया। यशंवत सिंह कुशवाह को 3 महीने तक हवालात मे रखने के बाद 1 वर्ष के कठोर कारावास और एक सौ रूपए अर्थदण्ड की सजा सुनाई गई वे 30 जून 1943 तक जेल मे रहे। मेहगॉव के जुगल किशोर सक्सेना ने आंदोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिस कारण से ब्रिटिश सरकार ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और 3 माह का कारावास दिया। मेहगॉव के ही वैजनाथ प्रसाद शर्मा जो राज्य पुलिस सेवा मे थे, के ऊपर इस आन्दोलन का इतना गंभीर प्रभाव पड़ा कि वे आंदोलनकारियों का सहयोग करने लगे जिसके कारण उन्हे राज्य पुलिस सेवा से निष्कासित कर दिया गया, इसके उपरांत वे पूर्णरूप से आंदोलन में कूद पड़े। बाद में उन्हें गिरफ्तार किया गया किन्तु अत्यधिक लोकप्रियता के कारण 24 दिन बाद उन्हें छोड़ दिया गया। राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी और दमनचक्र के विरोध स्वरूप पुलिस ने मुरैना नगर के प्रमुख नेता श्री हरीदास राठी, हरीदास सुर्जन, मुन्नालाल पंचोली आदि को गिरफ्तार कर लिया। मुरैना जिले के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख घटनाओं में ''झण्डा चौक'' की घटना प्रमुख है।[4] सितम्बर 1942 मे मुरैना के नवयुवको ने पंचायती धर्मशाला से एक जुलुस निकाला जिसमें 100–150 नवयुवकों ने हिस्सा लिया। प्रशासन को भी इस बात की खबर लग चुकी थी कि मुरैना मे आन्दोलनकारी गतिविधियाँ अत्यन्त तीव्र हो रही है। अतः ग्वालियर से डी. आई.जी. घाटकर साहब और मुरैना जिले के तत्कालीन सूबा (कलेक्टर) श्री मल्हारराव पवार को जुलूस रोकने का आदेश दिया गया। जब जुलूस हनुमान चौराहे के पास पहुँचा तब सूबा (कलेक्टर) और डी.आई.जी. ने नवयुवकों को चेतावनी दी कि भाग जाओ वर्ना लाठीचार्ज कर दिया जावेगा। इन नवयुवकों में मुंशीबाबूलाल जैन तथा भाई हरिगोविन्द ने इसमे विशिष्ट भूमिका निभाई। झंण्डा लिये हुए भाई हरिगोविन्द जुलूस में सबसे आगे चल रहे थे जब जुलूस अपने चरम पर पहुँच गया था और अनेक नवयुवक आजादी के तराने गाते हुए आगे बढ़ रहे थे तो पुलिस ने जुलूस को रोका इन पुलिसवालों मे 9 पुलिसवाले बन्दूक लिए अलग खडे थे। तथा 50 से अधिक पुलिसवाले लाठी लिए हुए थे। जब जुलूस मे से लोग भागे नहीं तो डी. आई.जी ने लाठीचार्ज करवा दिया। हरिगोविन्द के अनेक लाठीयाँ पडी लेकिन उन्होंने झंण्डा नहीं छोडा। कई नवयुवकों के खिलाफ पुलिस न वांरण्ट जारी कर दिया अनेक युवकों को पुलिस ने पकड़ लिया। उसी स्थान पर पोल पर झंण्डा गाडकर मुरैना में स्वतंत्रता उत्सव मनाया गया। आज भी मुरैना मे उस स्थान का नाम झंण्डा चौक है।[5] यहाँ आज भी प्रतिवर्ष 15 अगस्त और 26 जनवरी के दिन झंण्डा रोहण होता है। अनेक स्वतंत्रता सैनानियों ने मुरैना क्षेत्र में भूमिगत रहकर आन्दोलन को पूर्ण सहयोग प्रदान किया मुरैना से श्री छीतरमल जैन, वृन्दावन आजाद, गुलाब चन्द्रवर्मा, विधीचन्द्र बॉदिल, रामगोपाल, हीरालाल आदि स्वतंत्रता सैनानियों को जेल भेज दिया गया। मुरैना के ही गुलाबचन्द्र वर्मा ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन मे 9 अगस्त 1942 से भूमिगत रहकर सहयोग किया। 12 अगस्त की रात को सोते समय पकड़े गये इन्हे मुंगावली जेल मे रखा गया। मुरैना जिले की अम्बाह तहसील के श्री राधाचरण शर्मा ने भी अपने क्षेत्र के श्री रामनिवास शर्मा जी के साथ मिलकर 1942 के स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। 1942 में मुंगावली जेल में 11 अक्टूबर 1942 से 23 जनवरी 1943 तक बन्दी रहे।[6] सन् 1944 के माह जनवरी में आलमपुर मे प्रजामंण्डल की शाखा के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से एक केम्प इंदोर नगर के समीप राऊ मे लगाया गया। इस केम्प से लोटकर 9 अगस्त 1945 को 25 कार्यकर्ताओ ने ब्लेड से अपने हाथों की नाड़ियॉ चीरकर खून निकाल कर आजीवन स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रतिज्ञा की। भारत छोडो आंदोलन के समय ग्वालियर मे कई जगह केम्प लगाए गए इन केम्पों का उद्देश्य आंदोलन की गतिविधियों को रोकना था लेकिन केम्पों एवं भाषणों का कोई प्रभाव नहीं हुआ बल्कि चम्बल क्षेत्र के लोग राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति ओर अधिक आश्वस्त होने लगे।[7] राज्य कांग्रेस के संगठन के निर्देश पर जिला कांग्रेस के संगठन के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी ने भिण्ड के लोगों को आदेश दिया कि वे महाराज का स्वागत न करें।[8] इस जिले मे सैना के काफी सैनिक रहते थे उन सैनिको मे से अनेक लोगों ने आजाद हिंद फौज में शामिल होकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस के नेतृव में आजादी के लिए संघर्ष किया। ब्रिटिश प्रशासन के द्वारा चम्बल क्षेत्र में भी आन्दोलन के दमन का पूर्ण प्रयास किया गया लेकिन आंदोलन की गति धीमी तो हुई परंतु पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ एसी परिस्थिति में चम्बल क्षेत्र के लोगो ने अन्य क्षेत्रों के स्वतंत्रता सैनानियों से सम्पर्क स्थापित किया जैसे अजमेर के श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने लोगों को संदेश दिया कि खादी अपनाओ तथा छुआछूत की भावनाओ को समाप्त करो जिससे जन साधारण के हदय में अस्पृश्यता निवारण का संदेश प्रवेश कर गया। इसके के साथ–साथ

पंजाब के क्रान्तिकारी श्री मुनिराय ठुण्ड ने चम्बल क्षेत्र के नवयुवकों से सम्पर्क स्थापित किया, इन्होंने लोगो को क्रान्तिकारी विचारधाराओं की शिक्षा देने का कार्य किया। इस आधार पर श्री राम गोपाल बंसल, भागचंद्र जैन, नरेन्द्र कुमार लुहाडिया तथा राजबहादुर माथुर ने आंदोलन में भाग लेने के लिए कक्षाएं छोड दी जिसके कारण इन्हे स्कूल से निष्कासित कर दिया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में चंबल क्षेत्र की भूमिका तथा यहां के स्वतंत्रता सेनानियों पर हुए तत्कालीन प्रशासनिक अत्याचारों का वर्णन किया गया है।जिससे आज की पीढ़ी को यह ज्ञात हो सके कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चलाए गए आंदोलनों में चंबल क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है एवं उनके द्वारा दिए गए इस योगदान को आज की पीढ़ी भुला ना दे इसलिए इस शोध पत्र के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि चंबल क्षेत्र ने भी स्वतंत्रता की प्राप्ति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता आंदोलन में नीम के पत्थर बनकर रह गए चंबल क्षेत्र के इन स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को देश की जनता के समक्ष प्रस्तुत करना प्रमुख उद्देश्य है।

विषय विस्तार

राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी और दमनचक्र के विरोध स्वरूप चम्बल क्षेत्र में जुलूस और तोड–फोड की घटनांए प्रारम्भ हुई परिणाम स्वरूप पुलिस ने मुरैना नगर के प्रमुख नेता सर्व श्री हरीदास राठी, हरीदास सुर्जन, मुन्ना लाल पांचोली को गिरफ्तार कर लिया गया।[9] मुरैना जिले की अम्बाह तहसील के बरेह गॉव के स्वतत्रंता सैनानी कपूरचन्द्र लडाई में कूद पडे उन दिनों वे गॉव में तिरंगा झण्डा लेकर घूमते थे तो असरदार लोग उन पर व्यंग भी कसते थे, कि ये देश आजाद कराएगा। इस प्रकार के व्यंगों से उन्हें और बल मिलता था फिर वे मुरैना आ गए यहाँ उन्हे आजादी के दीवानों का साथ मिला। तब मुरैना में एक अन्य स्वतंत्रता सैनानी किशोरीलाल जैन पर्चे तैयार करते थे। उन पर्चो पर आजादी की बातें लिखी होती थी, समस्या यह थी कि पर्चे ज्यादा छपे हुए बाजार से नहीं आ पाते थे। इसलिए स्थानीय तौर पर ही इन पर्चो का निर्माण किया जाता था। छपे हुए पर्चो को पांडू मिट्टी की प्लेट पर फिट किया जाता था उस पर तेल लगाकर दूसरे कागज पर हाथ फेरते थे इस तरह एक पर्चे से छः पर्चे तैयार हो जाते थे। एक पर्चे को स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों के द्वारा रात को दीवालों पर एवं खम्बों पर चिपकाया जाता था, पकडे जाने पर प्रशासन की दमनात्मक कार्यवाही प्रारंभ हो जाती थी। कई सैनानियों पर लाठीचार्ज किया जाता था कई आंदोलनकारियों को गिरफ्तार कर लिया जाता था। मुरैना जिले के एक प्रमुख स्वतंत्रता सैनानी शिवनारायण शिवहरे ने स्वंय कई वर्ष पूर्व स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रकाश डाला और बताया कि आजादी के मायने तब समझ मे आये जब देश अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो गया तब तो किसी को बोलने तक की स्वतंत्रता नहीं थी। उस दोर में युवाओं ने देश को आजाद करने के लिए आंदोलनो में बढ़चढ़ कर भाग लिया बुजुर्गों के नेतृत्व से आंदोलनो को गति प्राप्त हुई और सभी लोगो के सहयोग से स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। आज का भारत अंग्रेजों के समय की गुलामी से करोड़ो गुना अच्छा है। आज हम और आप बोल सकते हैं।[10]

चम्बल क्षेत्र के भिण्ड एवं मुरैना जिले की तरह श्योपुर जिले के स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों ने भी भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया था तत्कालीन समय में श्योपुर जिले में जगीरें थी जिनके नाम है– बडोदा, जलालपुर, धानोट, तिलबानी, केलोर, रीगनी, कितनावली, तरारी, मीठा हुर्रा, पाण्डोला, जमाता, इप्लापुरा, जामपुरा, पालपुर, रघुनाथपुर, काठोन, गोअर, मावडी, गोपालपुर, इकलोद आदि। इनमें बडोदा व पालपुर बडी तथा सम्पन्न जागीरें थी इनके जागीरदार लोग इस क्षेत्र की राजनीति को सदैव प्रभावित करते आए है। इन सभी जागीरों में जनता को संघर्ष तो करना पडा था परन्तु बडोदा व रघुनाथपुर के जागीरदारों की जितनी शिकायतें प्राप्त हो रहीं थी इसलिए यहाँ पर जनता को अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए आंदोलन अति आवश्यक था। ब्रिटिश प्रशासन की रजामंदी से ये जागीरदार अपने क्षेत्र में अस्पृश्यता की भावनाएं फैलाए हुए थे। पीने का पानी सार्वजनिक कुंए से दलितों को नहीं लेने देते थे इसके विरोध में वीरपुर के सरवन लाल के नेतृत्व में आंदोलन चलाया गया। और दलितों को न्याय दिलाया गया। आंदोलन का उद्देश्य केवल जाति गत भेदभाव को मिटाना ही नही वरन् ऊँच–नीच के भेद को समाप्त करना भी आंदोलन का हिस्सा था।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि चम्बल क्षेत्र में स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति प्रशासनिक दृष्टिकोण अत्यंत कठोर रहा। आन्दोलनकारियों का दमन करने में ब्रिटिश प्रशासन ने भी घोर अत्याचार का सहारा लिया। चम्बल क्षेत्र का स्वतंत्रता आंन्दोलन भी प्रशासनिक अत्याचारों से त्रस्त रहा। लेकिन चम्बल क्षेत्र के स्वतंत्रता सैनानी इस प्रशासनिक दमन चक्र से भयभीत नहीं हुए बल्कि उनके हदय में नई ऊर्जा के संचार को नई गति प्रदान की जिससे अन्य नवयुवकों में भी राष्ट्रप्रेम के प्रति एक नई भावना का संचार हुआ और स्वतंत्रता की मंजिल हमें प्राप्त हुई।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अर्जुन सिंह भदोरिया, नीवं का पत्थर, विकास पब्लिशिंग, नई दिल्ली 1992 पृष्ठ 49*
2. *यशवंत सिंह कुशवाह, ग्वालियर राज्य की आजादी का संघर्ष, प्रथम खंण्ड, रामउजागर पाण्डेय, छपाई भवन लश्कर, ग्वालियर 1986 पृष्ठ 37*
3. *कालीचरण स्नेही, ग्वालियर के आसपास, सांस्कृतिक चेतना समिति लहार, भिण्ड, म.प्र. 1998 पृष्ठ–4*
4. *स्वतंत्रता संग्राम सैनानी जिला–मुरैना श्री बाबूलाल जैन से लिए दि. 8–4–2007 के व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर।*
5. *वही।*
6. *जिला मुरैना के स्वतंत्रता सैनानी स्व. श्री राधाचरण शर्मा जी के पुत्र प्रो.पी.के. शर्मा से दि. 12–10–2009 के साक्षात्कार के आधार पर।*

7. *दिनेश शर्मा, रामप्रसाद विस्मिल, रचनावली1, शुभम पब्लिकेशन, शाहदरा दिल्ली 1997 पृष्ठ 106।*
8. *रतनलाल परमार, महिदपुर का स्वतंत्रता संग्राम, इंदोर, 1944 पृष्ठ 39*
9. *स्वतंत्रता संग्राम सैनानी जिला–मुरैना श्री बाबूलाल जैन से लिए दिनांक 8–4–2007 के साक्षात्कार के आधार पर*
10. *दैनिक भास्कर समाचार पत्र ग्वालियर दिनांक 13 अगस्त 2007 के आधार पर*
11. *यशवंत सिंह कुशवाह, ग्वालियर राज्य की आजादी का संघर्ष, द्वितीय खंण्ड, राम उजागर पाण्डेय, छपाई भवन लश्कर, ग्वालियर, 1986, पृष्ठ 39*